डा0 ऋचा सिंह
एसोसिएट प्रो0
हिन्दी विभाग
हरिश्चन्द्र स्ना0 महा0 वाराणसी

भाषा–

भाषा का इतिहास उतना ही पुराना है, जितना कि मानव इतिहास। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में रहने के नाते उसे आपस में सर्वदा विचार विनिमय करना पड़ता है। आशय यह है कि गंध इन्द्रिय, स्वाद इन्द्रिय, स्पर्श इन्द्रिय, दृग इन्द्रिय तथा कर्ण इन्द्रिय इन पाचों ज्ञान इन्द्रियों में किसी के भी माध्यम से भी अपनी बात कही जा सकती है। अतः जिस साधन से विचार–विनिमय होता है, उसे ही भाषा की संज्ञा दी जाती है।

- भाषा वह साधन हैं, जिसके माध्यम से हम सोचते तथा अपने विचारों को व्यक्त करते हैं। 'भाषा' शब्द संस्कृत की 'भाष' धातु से बना है। (भाष व्यक्तया वाचि) व्यक्त वाणी का नाम भाषा है। जिसका अर्थ बोलना या कहना है। अर्थात भाषा वह है, जिसे बोला या कहा जाए।

परिभाषा

- प्लेटो– ''विचार आत्मा की एक मूक या अध्वनात्मक बातचीत है पर वहीं जब ध्वनात्मक होकर होंठों पर प्रकट होती हैं, तो उसे भाषा की संज्ञा देते हैं।''
- स्वीट के अनुसार– ''ध्वनात्मक शब्दों द्वारा विचार प्रकट करना ही भाषा है।
- क्रोचे के अनुसार– भाषा उस स्पष्ट, सीमित तथा सुगठित ध्वनि को कहते हैं, जो अभिवयंजना के लिए निर्धारित की जाती है।''
- डा0 बाबूराम सक्सेना–''जिन ध्वनि चिन्हों द्वारा मनुष्य परस्पर विचार–विनिमय करता है। उसको समष्टि रूप से भाषा कहते हैं।''

- कामता प्रसाद गुरू के अनुसार– ''भाषा साधन है, जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचार दूसरों पर भली–भॉति प्रकट कर सकता है और दूसरों के विचार को समझ सकता है।''

भाषा की परिभाषा कुछ इस प्रकार दी जा सकती है।

भाषा उच्चारण–अवयवों से उच्चरित यादृच्छिक ध्वनि प्रतीकों की वह व्यवस्था जिसके द्वारा समाज विशेष के लोग आपस में विचारों का आदान–प्रदान करते हैं।

डा0 भोलानाथ तिवारी के अनुसार– ''भाषा मानव उच्चरणावयों से उच्चरित यादृच्छिक ध्वनि प्रतीकों की वह संरचनात्मक व्यवस्था है जिसके द्वारा समाज–विशेष के लोग आपस में विचार–विनिमय करते हैं लेखक कवि या वक्ता के रूप में अनुभवों एवं भावों आदि को व्यक्त करते हैं तथा अपने व्यैक्तिक और सामाजिक व्यक्तित्व विशिष्टता तथा अस्मिता के सम्बन्ध में जाने अनजाने जानकारी देते है।''

भाषा की विशेषताएँ और प्रकृति

• भाषा पैतृक सम्पत्ति नहीं है–

कुछ लोगों का विश्वास है कि भाषा पैतृक सम्पत्ति है। पिता की भाषा पुत्र को पैतृक सम्पत्ति की भॉति अनायास ही प्राप्त होती है किन्तु यर्थाथ ऐसी बात नहीं। यदि किसी बच्चे को एक दो वर्ष की अवस्था में भारत में नहीं वरन फ्रॉस में पाला जाए तो वह वहॉ की भाषा फ्रैन्च बोलेगा वही उसकी अपनी भाषा होगी

भाषा पैतृक सम्पत्ति नहीं होती।

• भाषा अर्जित सम्पत्ति है–

भाषा अपने आस–पास के लोगों से अर्जित की जाती है। बच्चा जब पैदा होता है। धीरे–धीरे वह बड़ा होता है ता अपने आस–पास के लोगों से ही सीखता है, इसलिए भाषा अर्जित सम्पत्ति है।

- भाषा आद्यन्त सामाजिक वस्तु वस्तु है—

व्यक्ति भाषा का अर्जन समाज से करता है भाषा पूर्णतः आदि से अन्त तक समाज से सम्बन्धित है उसका विकास समाज से ही होता है

- भाषा परम्परा है व्यक्ति उसका अर्जन कर सकता है उसे उत्पन्न नहीं कर सकता—

भाषा परम्परा से चली आ रही है व्यक्ति उसका अर्जन परम्परा और समाज से कर सकता है किन्तु उसे उत्पन्न नहीं कर सकता।

- भाषा का अर्जन अनुकरण द्वारा होता हैं—

भाषा को हम अनुकरण द्वारा सीखते हैं शिशु के समक्ष माँ दूध कहती है वह सुनता है धीरे—धीरे वह भी बोलने का प्रयास करता है।

भाषा चिरपरिवर्तनशील है–

- भाषा के दो आधार है 1 शारिरिक (भौतिक), 2 मानसिक परिवर्तन में ये दोनों ही काम करते हैं अनुकरणकर्ता की शारिरिक और मानसिक परिस्थिति सर्वदा ठीक वैसी ही नहीं रहती है जिसका अनुकरण किया जाता है। इस प्रकार प्रत्येक अनुकरण में कुछ न कुछ विभिन्नता का आ जाना उतना ही स्वाभाविक है। जितना की अनुकरण करना इस प्रकार भाषा प्रति पल में परिवर्तन होती है।
- प्रत्येक भाषा की एक भौगोलिक सीमा होती हैं उस भौगोलिक सीमा के भीतर ही उस भाषा का अपना वास्तविक क्षेत्र होता है उस सीमा के बाहर उसका थोड़ा या अधिक परिवर्तित हो जाता है। या उस सीमा के बाहर किसी पूर्णतः भिन्न भाषा की सीमा शुरू हो जाति है।

प्रत्येक भाषा की अपनी संरचना अलग होती है–

- किन्ही भी दो भाषाओं का ढ़ॉचा पूर्णतया एक नहीं होता है उनमें ध्वनि शब्द रूप वाक्य अर्थ आदि में किसी भी एक स्तर पर या एक से अधिक स्तरों पर संरचना या ढ़ॉचा में अन्तर अवश्य होता है यही अन्तर उनकी अलग या स्वतन्त्र सत्ता की कारण बनती है।

भाषा संयोगावस्था से वियोगावस्था की ओर जाती है–

- पहले लोगों का विचार था कि भाषा वियोग व्यवहित या विश्लेष से संयोग (सहित या संश्लेषण) की ओर जाती है। कुछ लोगों का यह भी मत रहा कि बारी–बारी से भाषाओं की जिन्दगी दोनों स्थितियों में गुजरती रहती है। किन्तु अब ये मत भ्रामक सिद्ध हो चुके है। नवीन मत के अनुसार भाषा संयोग से वियोग की ओर जाती है। संयोग का अर्थ है मिली होने की स्थिति जैसे रामः गच्छति तथा वियोग का अर्थ अलग हुई स्थिति जैसे राम जाता है।
- हर भाषा का स्पष्टतः या सुस्पटतः एक मानक रूप होता है।

भाषा के अभिलक्षण

1. यादृच्छिकता
2. सृजनात्मकता
3. अनुकरण ग्राह्यता
4. परिवर्तनशीलता
5. विविक्तता
6. द्वैतता
7. भूमिकाओं की परस्पर परिवर्तनीयता
8. अन्तरणता
9. मौखिक श्रव्यता

भाषा के अभिलक्षण

- सृजनात्मकता – सृजन क्षमता भाषा में रूप शब्द प्रचलित हैं फिर भी सादृष्य के आधार पर भाषा में नवीन शब्द की असीम सम्भावना बनी रहती है ऐसा होता भी रहता है नव सृजित शब्द या वाक्य को स्रोता को समझने में कठिनाई होती है।

  सृजनात्मकता भाषा को समृद्ध बनाती है।
- यादृच्छिकता – इसका अर्थ 'जैसी इच्छा हो' अर्थात माना हुआ समाज में अपनी स्वेच्छा के आधार पर किसी भी पदार्थ के लिए एक शब्द निर्धारण कर दिया यही निर्धारण पदार्थ और सम्बन्ध का नित्य सम्बन्ध बन गया।
- अनुकरण ग्राह्यता के कारण ही एक व्यक्ति अपनी भाषा के अतरिक्त अन्य भाषाए अनुकरण द्वारा सीख सकता है।
- परिवर्तनशीलता मानवेत्तर जीवों की भाषा परिवर्तनशील होती है। संस्कृत काल में कर्म प्राकृत में कम और आधुनिक काल में काम हो गया।
- विवित्तता – मानव भाषा का स्वय ऐसा नहीं है जो पूरा अविच्छिन्न रूप में एक हो। वह तत्वतः कई घटकों या इकाइयों में विभाज्य है। अदाहरण के लिए वाक्य एकाधिक शब्दों से बनता है तथा शब्द एकाधिक ध्वनियों से।
- द्वैदता – भाषा में वाक्य या उच्चार को ले उसमें दो स्तर होते है। एक स्तर की इकाइयॉ निरर्थक होती है। इन दो स्तरों की स्थिति को द्वैदता कहते हैं। इन इकाईयों में सार्थक इकाइयों के रूपिम कहते हैं।
- भूमिकाओं में परस्पर परिवर्तनियता – जब हम बात–चीत करते हैं तो वक्ता स्रोता की भूमिकाएॅ बदलती रहती है।
- अंतस्पता – कुछ अपवदों को छोड़कर मानवेत्तर जीवों की भाषा केवल वर्तमान के विषय में सूचना दे सकती है। भूत या भविष्य के विषय में नहीं इसके विपरीत मानव भाषा वर्तमान काल में

प्रयुक्त होते हुए भी भूत या भविष्य में भी कहने में समर्थ है। इस तरह मानव भाषा कालान्तरण कर सकती है।

- मौखिक श्रव्यता – मानव भाषा मुँह से बोली जाती है। कान से सुनी जाती है कान से सुनी जाती है इस तरह वह मौखिक श्रव्य सरणि का प्रयोग करती है।

सन्दर्भ :   भोलानाथ तिवारी,
             द्वारिका प्रसाद सक्सेना

धन्यवाद